शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिन्दी साहित्यिक शोध : चुनौतियां और सम्भवनाएं
(राजी सेठ के कथा लेखन के सन्दर्भ में)

अन्तिमबाला जायसवाल (शोधार्थी)
भाषा अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

हिंदी साहित्य में अनुसंधान के क्षेत्र में अनेक चुनौतियां मौजूद हैं। आधुनिक काल के साहित्य सृजन का परिवेश अपने पूर्ववर्ती परिवेश से एकदम भिन्न है। विज्ञान और तकनीक के विकास ने सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक ताने-बाने को गहराई से प्रभावित किया है। यंत्रों की खोज मनुष्य के जीवन को सरल बनाने के उद्देश्य से हुई थी, परन्तु आज इन्ही यंत्रों ने मनुष्य का जीवन जटिल बना दिया है। इसका प्रभाव साहित्यकारों के चिंतन पर भी हुआ है। उनकी दृष्टि बाहर होने वाली हलचलों से ज्यादा भीतर चलने वाली उथल-पुथल पर अधिक केन्द्रित हुई। परिणामस्वरूप मन:स्तिथियों का विश्लेषण साहित्य में अधिक होने लगा। इससे कहानी विधा भी अछूती नहीं रही। इन कहानियों के शोधपरक दृष्टिकोण में भी बदलाव आया। प्रस्तुत शोध पत्र में राजी सेठ की कहानियों के विश्लेषण में मौजूद चुनौतियों और संभावनाओं पर प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तावना

प्रेमचंद से कहानी की वास्तविक पहचान की यात्रा की शुरूआत माने तो प्रेमचंद ने अपने समय के ग्रामीण परिवेश में शोषित और कष्टप्रद पीड़ा को भोगते समाज के निम्न स्तर पर जीने वालों की जीवटता, असहयता को रेखांकित कर हिन्दी कथा लेखन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन पैदा किया। ग्रामीण क्षेत्र प्रेमचंद के अपने अनुभव संसार का हिस्सा है। इसलिए उनके तमाम पात्र, कथानक और परिस्थितियां ग्रामीण परिवेश से ही प्रेमचंद ने चुने हैं, किन्तु तत्कालीन धार्मिक मान्यताओं के प्रभाव स्वरूप उन्होंने जहां यथार्थ को उसके मूल रूप में चित्रित किया है वहीं कथावस्तु और पात्रों को आदर्शवादी मोड़ भी दिया है और यहीं से अनुभूति की प्रामाणिकता खण्डित हुई है, किन्तु 'कफन' और 'पूस की रात' कहानी में इस आदर्शोंमुखता के बदले निरा नग्न यथार्थ प्रकट किया है। उनके बाद जैनेन्द्र, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय ने आदमी-आदमी और आदमी-समाज के रिश्तों मे बिखराव की कहानियां लिखीं। मनुष्य के भीतर चलने वाली उथल-पुथल को मनोवैज्ञानिक स्वरूप में व्यक्त करने के प्रयास किये जहां कहानियों के पात्र परम्परागत धार्मिक मान्यताओं की विशेष चिन्ता किये बगैर आचरण करते हैं।

आजादी के बाद देश में प्रजातांत्रिक प्रणाली के माध्यम से अपेक्षाएं पूरी होने की आशाएं संजोई, किन्तु जन समाज की समस्याएं दूर करने के बजाय राजनीतिज्ञों ने जिस प्रकार आचरण किया उससे जनतंत्र के प्रति जनता का पूरी तरह से मोहभंग हुआ। उसकी समूचे शासन तंत्र के प्रति आस्था ही डगमगा गई। इस कालखण्ड की कहानियों के सन्दर्भ में राजेन्द्र यादव लिखते हैं-

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

"अचानक ही अकेले कुंठित, निर्वासित, आत्महंता, ड्राप-आउट नायक ही पूरे कैनवास पर छा गये । यह निश्चित ही मोहभंग का युग था।"1 इस मोहभंग का चित्रण इस काल की कहानी में आया है। इस बीच दूसरे महायुद्ध की त्रासदी और महायुद्ध की समाप्ति पर उससे उपजी परिस्थितियों के दुष्चक्र को सहता हुआ समाज, घोर आर्थिक अभाव, बेरोजगारी, दैनिक जीवन की जरूरतें पूरी करने की मारकाट, परम्परागत घरेलू उद्योग धंधों के नष्ट होने से आजीविका के आधार से वंचित भुखमरी के शिकार समाज ने काफी कुछ भोगा। एक भयानक मंदी की चपेट मे जनसमुदाय कराह उठा था।

लेकिन पुनः सन साठ के बाद सामाजिक प्रतिबद्धता की बात कहानी में उभरने लगी। संभवतः साठोत्तरी पीढ़ी ने महसूस किया कि मात्र पीड़ा के अरण्यरोदन से जीवन की दशा बदली नहीं जा सकती। अतः कहानियों में जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उभरने लगे।

नई कहानी के माध्यम से कहानी एक और नये मोड़ पर आई। इस कालखण्ड के रचानाकारों में रचनात्मक बेचैनी, वास्तविकता पाने और व्यक्त करने की तड़प, , अपने पूरे परिवेश को उसके यथार्थ रूप मे जानने की उत्कट लालसा नई कहानी के लेखकों में दिखाई देने लगी। आदमी-आदमी के सम्बन्धों को गहराई से जानने का प्रयास नई कहानी मे दिखाई देता है। पुरातन दकियानूसी मान्यताओं में दम घुटते आदमी का, इन मान्यताओं का विंध्वस कर अपनी स्वाधीन अस्मिता गढ़ने का प्रयास 'नई कहानी' में मुखर होने लगा। परिवेश की वास्तविकता, अनुभूति की प्रामाणिकता ने जहां अभिव्यक्ति के स्तर में नवीनता उत्पन्न की वहीं शिल्प को भी नये रूप दिये गये।

राजेन्द्र यादव लिखते है, "कहानी अपनी-अपनी जिन्दगी को स्वर देने वाली भाषा, नये-नये मुहावरों, लहजों और शब्दों से समृद्ध होती रही और सारा हिन्दी जगत् ऐसी रचनात्मक हलचलों से भर उठा कि लगा, पहली बार कहानी-लेखन और कहानी की समझ का सिलसिला शुरू हुआ।"2

राजी सेठ का कथा लेखन

राजी सेठ ने काफी प्रौढ़ावस्था में कथा-लेखन की शुरूवात की। अतः कहानी की कथा-वस्तु और पात्रों में पर्याप्त संजीदगी और गंभीरता दृष्टिगत होती है। दर्शन के अध्ययन का भी यही प्रभाव रहा कि स्थितियों और पात्रों के मानसिक संसार और संवेदना को व्याख्यायित करते समय उनकी दार्शनिकता भाषा पर सवार हुई जिससे भाषा कहीं-कहीं बोझिल हो गई है।

कहानी के विश्लेषण के लिए आलोचकों ने कहानी को-कथावस्तु पात्र तथा चरित्र चित्रण, देश, काल परिस्थिति अथवा वातावरण, भाषा शैली, संवाद , उद्देश्य जैसे खानों में बांटकर विश्लेषण की परम्परा निर्धारित की है,किन्तु आधुनिक समीक्षकों ने इस परम्परा को अवांछित मानते हुए कहानी के विश्लेषण में कहानी के समग्र प्रभाव को मानने पर जोर दिया है। किन्तु यहां शोधार्थियों के सामने 'कहानी के प्रभाव को आँकने के लिए कोई दिशा-निर्देश नहीं दिये हैं। सभी पाठकों की मानसिक स्थिति, संवेदना का धरातल, जीवनानुभव समान नहीं हो सकते। अतः भिन्न-भिन्न पाठकों पर उनकी वैचारिक भिन्नता के कारण भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। अतः कहानी के समग्र प्रभाव का विश्लेषण कहां तक तथ्यपरक होगा ? यह एक विचारणीय प्रश्न है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नई कहानियों में कथावस्तु नाम मात्र की होती है। वह कहानी के पात्रों की मनःस्थिति की पृष्ठभूमि के रूप में होती है अथवा किन्हीं विशिष्ट स्थितियों को ही प्रदर्शित करती है, जिनसे संलग्न पात्रों का द्वंद्व अथवा पात्रों की प्रतिक्रिया प्रकट करने के लिए ही कथावस्तु होती है। राजीसेठ की नई कहानियों में यह तथ्य दृष्टिगत होता है। राजी सेठ की कहानियों में पात्रों के आपसी सम्बन्ध भी बहुत-सी कहानियों में स्पष्ट नहीं होते हैं, जैसा वास्तविक जगत् में पात्रों के आपसी रिश्ते होते हैं। उनके आपसी व्यवहार से उनके अमूर्त रिश्तों की अवधारणा पाठक को करना होती है। राजी सेठ की कहानियों में भी कहीं-कहीं इस प्रकार के मानवीय सम्बन्धों की अस्पष्टता दिखाई देती है। वस्तुतः शोधार्थी की दृष्टि से जहां पात्रों की द्वन्द्वात्मक स्थितियों के विष्लेषण पर ही लेखिका का जोर होता है वहां कहानी की रोचकता में व्याघात भी उत्पन्न होता है।

जैसा कि 'रस' को काव्य की आत्मा के रूप में रसवादियों ने निरूपित किया है वैसे कहानी की 'आत्मा' पर किसी आलोचक ने कहीं विचार नहीं किया है। वैसे भी 'एक था राजा, एक थी रानी' जैसी अथवा प्रेमचंद युगीन कहानियों में कथावस्तु को प्रमुखता दी जाती रही, जिससे पाठक कहानी की कथावस्तु से पूर्ण परिचित होने का अभ्यस्त होता है। संभवतः इसी कथावस्तु के कारण कहानी में रोचकता थी। वर्तमान कहानी में कथावस्तु की हलकी सी उपस्थिति से कहानी की रोचकता बाधित होती है।

प्रत्येक लेखक के अनुभव स्वतंत्र होते हैं। तदनुसार उसके अभिव्यक्ति के रूप भी स्वतंत्र होते है, किन्तु ये सभी की चेतना से अविच्छिन्न होते हैं। अतः जो बात लेखक की चेतना में प्रमुख रूप से उभरती है उसी में मानवीय सरोकार भी निहित होते हैं, क्योंकि लेखक भी एक मनुष्य है। उसके सुख-दुःख, आशा-निरशा, आकांक्षा-अपेक्षाएं सभी आदमी की मनःस्थिति के अंग है यही तथ्य रचाना के समय लेखक का साधारणीकरण करते हैं। 'यह कहानी नहीं' संकलन की समीक्षा में आलोचक लिखता है कि, "इन कहानियों का कथ्य चेहरों के पीछे के चेहरों को पूरे रचनात्मक धीरज के साथ परत-दर-परत उकेरता एक ऐसे विश्वसनीय संसार के बीच लाकर रखता है जहां मनुष्य का विवेक मनुष्य के यथार्थ जितना ही सच और जरूरी है।" उदाहरण मे लिए 'अन्धे मोड़ से आगे, संकलन की कहानी 'समान्तर चलते हुए' का नायक और उसकी प्रेयसी (?) मंजुला, दोनों अपनी-अपनी दारूण परिस्थितियों से समझौता कर जीने के लिए बाध्य है।' इस कथ्य को बड़ी प्रखरता से राजी सेठ ने व्यक्त किया है। 'अमूर्त कुछ' में, मैं' (लेखक) की पत्नी और लेखक का मित्र कप्पी के बीच सम्बन्घ कभी मूर्त रूप में कथा में प्रकट नहीं होते। कप्पी की दयनीय स्थिति से उपजी लेखक की सहानुभूति खुलकर इन संबंधों का विराध नहीं करने देती।

राजी सेठ की कहानियां पढ़ने के बाद कहानी की स्थितियां और पात्रों की उन स्थितियों के बीच प्रतिक्रियाएं बहुत कुछ सोचने के लिए बाध्य करती है। 'उसका आकाश' के लकवा ग्रस्त बूढ़े की विवशता पाठक सघनता से महसूस करने लगता है। कहानी का यही कथ्य है जिसकी अभिव्यक्ति में लेखिका सफल हुई है।

किन्तु राजी सेठ की कहानियों में से गुजरते हुए शोधार्थी ने पाया कि उनकी एक समान भाषिक संरचना, कहानी के विपरीत लगती है। कहानी में से सहज भाषा का प्रयोग होना चाहिए, किन्तु

भाषा पर प्रौढ़ दार्शनिक अभिव्यक्ति कहीं-कहीं कथ्य तक पहुंचने में रूकावट पैदा करती है। कहानी के परिवेश के साथ भी पाठक तादात्म्य पाने में कठिनाई महसूस करता है। धर्मवीर भारती ने कहानी की एक सीधी-सादी परिभाषा दी है कि 'कहानी कहानी होनी चाहिए।' इस दृष्टिकोण से कहानी के पात्रानुकूल और स्थितियों के अनुकूल भाषिक प्रयोग में सहजता अपेक्षित है। राजी सेठ की कहानियों में ऐसा दृष्टिगत नहीं होता। अधिकांश कहानियों की भाषा अत्यधिक प्रौढ़ और दार्शनिक-की सी अभिव्यक्ति से बोझिल है। इससे पात्रों के चरित्र चित्रण में कई जगह अस्पष्टता महसूस होती है।

अतः संक्षेप में जहां राजी सेठ की कहानियों का विश्लेषण करने का प्रश्न है, इस प्रकार की चुनौतियों का शोधार्थी को सामना करना पड़ता है। राजी सेठ एक अलग रचना संसार खड़ा कर कहानी को एक नये रंग में रूपायित करती है और पात्रों की अन्तरंग वस्तुस्थिति को उजागर करने की सामर्थ्य भी उनकी कहानियों को एक नूतन वैशिष्ट्य प्रदान करती है ।

संदर्भ ग्रन्थ

1. कहानी: अनुभव और अभिव्यक्ति, राजेन्द्र यादव, पृ. 43

2. कहानी: अनुभव और अभिव्यक्ति, राजेन्द्र यादव, पृ. 55